(1)

आता नहीं हमको, खुद के कसीदे पढ़ना।

क्योंकि, जब भी करते हैं; उनकी ही बात करते हैं।।

(2)

सच्चाई जानने की जिद ने कबाड़ा कर दिया।

बड़ा मज़ा था, जब वो हमसे झूठ बोलते थे।।

(3)

कद, कलर, लुक, फिगर।

दिल मिले हों, क्या उम्र।।

(4)

किसी में कुछ नहीं होता, ये मेरी भूख है जो कि।

निरी बेजान चीज़ों में, बला की आग भर्ती है।।

(5)

More we have, Less we like;

So, have Less, like it More.